करन था और मैं समझता हूं कि जो स्थगन प्रस्ताव यहां लाया गया है उसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। (व्यवधान)

श्री राम विलास पासवान : अब प्रधान मन्त्री जी बोलेंगे लेकिन मैं उनसे इस घटना से संबंधित दो चीजों के बारे में जानकारी चाहूंगा। जिस अफसर ने गोली मारी उसको पुरस्कार कैसे दे दिया गया और दूसरा जो लोग मरे हैं क्या वह डकैत थे ?

श्री रामजी लाल सुमन उपाध्यक्ष महोदय जैसा कि मैंने पहले आपसे निवेदन किया है कि जो सी० आई० डी० जांच की प्रारम्भिक रपट है, उसमें पुलिस के रोल को संदेहपूर्वक माना गया है। उस जांच के अनुसार अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही की गई है। जांच चल रही है इसलिये मेहरबानी करके आप परिणामों का इन्तजार करें।

श्री मदन लाल खुराना : गिरफ्तार कितने लोगों को किया गया है ?

श्री राम जी लाल सुमन : उपाध्यक्ष महोदय, हम लोग जांच की परिभाषा अपनी सुविधानुसार बना लेते हैं। आप और हम में से कोई ऐसा आदमी नहीं है। जिसके खिलाफ 10-20 मुकदमे न चल रहे हों। (व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना : हमारे साथ तो ऐसी कोई बात नहीं है।

प्रधान मंत्री (श्री चन्द्रशेखर) : उपाध्यक्ष महोदय, इस विषय पर चर्चा आज दोपहर से चल रही है। मैं क्षमा चाहता हूं कि मैं यहां उपस्थित नहीं हो सका। मैं इस सदन की भावना को समझता हूं लेकिन परिस्थितियां ऐसी हैं कि हरिजनों पर अत्याचार हो रहा है। उधर गल्फ में मानवता का संहार हो रहा है। मुझे दूसरे सदन में जाना पड़ा वहां गल्फ पर बहस थी।

पिछले दिनों जब यह चर्चा सदन में हमारे मित्र श्री मदन लाल खुराना और विजय कुमार मल्होत्रा ने उठायी थी तो मैंने उसी समय यह कहा था कि यह गम्भीर चिन्ता का विषय है। हमारे देश में गरीब तबकों के ऊपर जो शोषित उपेक्षित समाज है उसके ऊपर अत्याचार हो तो इसकी गम्भीरता बढ़ जाती है। जब इसमें शासन की वह इकाइयां जो सुरक्षा के लिये जिम्मेदार हैं, उनके ऊपर संदेह हो तो उसकी गम्भीरता और बढ़ जाती है। मुझे यह कहने में दुख होता है कि यह घटना ऐसी है जिनमें वहां के पुलिस के लोगों का व्यवहार संदेह से परे नहीं है। यह बात राज्य सरकार भी मानती है। जो जानकारी हमने की है उससे भी ऐसा लगता है।

पुलिस के कुछ अधिकारियों ने ज्यादती की और ज्यादती कोई ऐसी वैसी नहीं, जिसमें कुछ निर्दोष लोगों की जानें गई। अब उसमे कितने दोषी थे, कितने निर्दोष थे, इस आंकड़े में मैं पड़ना नहीं चाहता लेकिन अगर एक भी निर्दोष आदमी मारा गया या दोषी आदमी भी गलत तरीके से मारा गया तो यह गलत बात है। मैं इस सदन को यह विश्वास दिलाता हूं कि उसकी पूरी जांच होगी और जो भी दोषी पाया जायेगा, उसे सजा भी मिलेगी।

उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस बारे में कदम उठाये हैं और जांच हो रही है। हम समझते हैं जल्दी ही उसका परिणाम निकलेगा।

एक माननीय सदस्य : अरैस्ट तो नहीं किया किसी को अभी तक।

श्री चन्द्रशेखर : मैं उसका उत्तर दूंगा। मुझे यह कहा गया कि एक अधिकारी, जिसको गिरफ्तार करने की बात की गयी है, वह फरार है और कुछ लोगों की जमानत करा ली गयी है, इस कारण गिरफ्तारी नहीं हुई। जानबूझकर किसी को नहीं छोड़ा गया है लेकिन ··· (व्यवधान)····

श्री राजबीर सिंह : 302 की जमानत हो गई एडवांस में ? हमारे यहां गांव का आदमी कोर्ट में जाता है··· (व्यवधान)····इसी से नीयत का मालूम पड़ जाता है। 302 में जमानत नहीं होती···· (व्यवधान) ···

श्री चन्द्र शेखर : उपाध्यक्ष महोदय, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता····

उपाध्यक्ष महोदय : जमानत कोर्ट से होती है।

श्री चन्द्र शेखर : मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। यह सूचना है, यह सूचना गलत भी हो सकती है, मैं सदन में पहले ही कह दूं लेकिन एक अजीब प्रश्न है, जिसका जवाब मेरे पास नहीं है. आखिर अदालत ने किसी को जमानत दे दी हो तो सरकार के वश की बात नहीं है और सरकार की नीयत इस बारे में···(व्यवधान)···लेकिन अगर कोई असावधानी हुई है, किसी के जरिये तो उस असावधानी को हम लोग देखेंगे कि उसमें सुधार किया जाए।

उपाध्यक्ष जी, देश एक अजीब लत से, एक संक्रमण काल से गुजर रहा है हमारे समाज का एक वर्ग जो हजारों वर्षों से शोषित और पीड़ित रहा है, वह इतिहास पर अपना पहला चरण रख रहा है, पहला कदम रख रहा है, जो हमारे आदिवासी, हरिजन और कुछ गरीब पिछड़े वर्ग के लोग हैं, वह समाज के उन तबकों से आते हैं; जिनको आज से नहीं सैकड़ों हजारों वर्षों से हमने कहा है कि तुम शोषित, पीड़ित, लांछित हो, तुमको प्रकृति ने, कुदरत ने, भगवान ने, खुदा ने बनाया है, यही जीवन लेकर तुम पैदा हुए हो लेकिन उन वर्गों के लोगों में चेतना आ रही है, जागृति आ रही है, दो कारणों से जागृति आ रही है, एक तो लोकतांत्रिक जनतंत्र में हम हर पांच वर्ष पर और कभी-कभी जल्दी भी उनके पास जाते हैं और उनसे कहते हैं···(व्यवधान) प्रसन्न हो गये ? अगर इससे प्रसन्न हो गये तो मुझे बहुत खुशी है।

मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि हम यह जाकर कहते हैं कि तुम्हीं समाज को बनाने वाले हो, तुम्हारे बल पर कल का हिन्दुस्तान बनेगा तो एक तो जागृति के कारण आ रहा है, दूसरे समाज की अपनी एक गत्यात्मकता होती है, जिसको सोशल डायनेमिज्म कहते हैं, चाहे हम चाहें, या ना चाहें समाज स्वयं में परिवर्तित होता रहा है, उसमें यथास्थिति नहीं रह सकती।

उपाध्यक्ष महोदय, जब हम लोग विश्वविद्यालय में थे, उस समय हिन्दुस्तान में जितने विद्यार्थी विश्वविद्यालय में शिक्षा पा रहे थे, उतने ही विद्यार्थी आज हरिजन और आदिवासी परि-

वारों के विश्वविद्यालयों और कालेजों में शिक्षा पा रहे है। उनको दुनिया में क्रान्तियों के इतिहास बताये जाते हैं और वह जानते हैं कि किसी भगवान ने, किसी खुदा ने नाबराबर और शोषित, उपेक्षित नहीं बनाया, सामाजिक व्यवस्था ने आज के तर्जे अमल ने उन्हें शोसित और उपेक्षित बनाया है इसलिए वह अपना अधिकार चाहता है। अब हमें और आपको तय करना है कि हम उनकी आकांक्षा के अनुरूप, उनके जज्बातों के मुताबिक अपने को बदलेंगे, राज की नीति को सरकार के कार्यक्रमों को निर्धारित उस आधार पर करेंगे या शासन की दमनकारी शक्तियों का उपयोग करके उनकी आवाज को हम दबाने की कोशिश करेंगे।

दुर्भाग्य की बात यह है कि अब तक हम किसी को दोष नहीं देना चाहते, सामाजिक व्यवस्था का परिवर्तन आसान काम नहीं होता। व्यवस्था पर, जो लोग सम्पत्ति पर, शक्ति पर, राजसत्ता पर हावी होते हैं, आसानी से अपने हितों की तिलांजलि नहीं दे सकते।

[अनुवाद]

डा० विप्लव दासगुप्त (कलकत्ता दक्षिण) : इधर-उधर की बातें करने से अच्छा होगा कि आप विशिष्ट मुद्दे और घटना की बात करें जिस पर हम यहां चर्चा कर रहे हैं···(**व्यवधान**)···

[हिन्दी]

एम माननीय सदस्य : आप प्रतापगढ़ गये थे या नहीं ?

श्री चन्द्र शेखर : अगर शोर करना है तो ठीक है, मुझे उसमें कोई एतराज नहीं। दोनों तरफ से करो, हमें कोई एतराज नहीं है।

यह बात सही है चिल्लाते वही है जो डरते हैं। जिनको डर नहीं होता है, वे चिल्लाते नहीं हैं। इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि हमको परिवर्तन की धारा को तेज करना होगा और हमारे मित्र ने अभी पूछा, मैं स्पैसिफिक रूप से कहता हूं, अगर इस स्थिति को मिटाना है तो हमको परिवर्तन की धारा को तेजी से लेना पड़ेगा। उन वर्गों के हित में काम करना होगा, जो वर्ग आज तक शोषित और उपेक्षित रहे हैं। यह सही है कि कानून और व्यवस्था की बात है, यह सही है कि इसमें पुलिस की कमजोरी है, यह सही है कि इसमें प्रशासन की कमजोरी है, लेकिन कमजोरी हमारी सामाजिक व्यवस्था की भी है। उस सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना होगा और उस दिशा में हमें कदम उठाना पड़ेगा। इसलिए हम चाहेंगे कि जो लोग आज जिन अत्याचारों की बात करते हैं, वे सही दिशा में कम से कम इतना तो कदम उठा रहे हैं कि सामाजिक चेतना की धारा को समझने लगे हैं। जो सामाजिक चेतना आज अपना स्थान मांग रही है और उस सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करने की मांग कर रही है, जिस सामाजिक व्यवस्था के अन्दर इस तरह का शोषण और इस तरह का दमन संभव हो सका है। मुझे विश्वास है कि मानसिकता बनी रहेगी। जब हम आर्थिक नीतियों का विश्लेषण करेंगे, तब हम समाज को बदलने के लिए कदम उठायेंगे। उस समय हम कहीं बगलें न झांकने लगें। इस बात को सोचना चाहिए कि मानव पीड़ा को केवल व्यक्तिगत घटनाओं में न देख कर मानव पीड़ा को सामाजिक परिवर्तन के परिवेश में देखने की हमको शक्ति प्राप्त करनी होगी।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे विश्वास है कि आज इस सदन में जो बहस चली है, वह बहस एक सही दिशा में है। लेकिन इस बहस को इसकी मंजिल तक पहुंचाना होगा, इसको, गंतव्य तक पहुंचाना होगा और बड़ा अच्छा होगा यदि यह सदन इस बात पर तत्पर हो, इस बात के लिए तैयार हो कि हम सब मिलकर उस सामाजिक परिवर्तन को लाने की कोशिश करें, जिस सामाजिक परिवर्तन में कोई हरिजन और आदिवासी बेबस न हो, कोई लाचार न हो और कोई उस दमन का शिकार न बनने पाये। लेकिन मुझे दुःख के साथ और सकोच के साथ कहना पड़ता है कि आज हमारे मित्रों में इस सवाल पर एकता दिखाई पड़ती है, लेकिन सामाजिक परिवर्तन की नीतियों के सवाल पर हम सदन में वह एकता नही देख पाते हैं। मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी अगर हमारे मित्र जो इधर बैठे हुये हैं और उधर बैठे हुये हैं, दोनों मिलकर के सामाजिक परिवर्तन की धारा को तेज करने में साथ काम करेंगे देश को उस दिशा की ओर ले जाने की कोशिश करेंगे···(**व्यवधान**)····आपकी नजर में मैं दकियानूसी हूंगा, लेकिन प्रगतिशीलता जहां पर है, मैं उसकी चर्चा कर रहा हूं।··· (**व्यवधान**)···

उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक ला एण्ड आर्डर का सवाल है, कानून और व्यवस्था का सवाल है, मानव जाति का सवाल है, उसमें कोई अन्तर नहीं है, चाहे वह बिहार हो, यू० पी० हो। मैं एक बात और देखता हूं, हर सवाल को हम ऐसा समझने हैं कि एक दलगत सवाल है। मौत दलगत नहीं होती है, मौत जहां होती है, वहां इंसानियत का कत्ल होता है और उस पर कोई राजनीतिक मतभेद लगाने का सवाल नहीं उठता है। इसलिए मैं यह कहता हूं कि कम से कम कुछ सवालों पर तो हम एक मत हो करके बोलें। अगर किसी के द्वारा सरकार की ओर से यह कहा गया होता कि वहां जो हुआ है, बहुत अच्छा हुआ है, तो बात समझ में आती है। हमारे कई मित्रों ने दस्ता दिखाया और अगर उत्तर प्रदेश की सरकार ने कहा कि सरकारी अधिकारियों ने बड़ा अच्छा काम किया है तो मैं पहला आदमी होऊंगा, आपके साथ यह कहने में कि उत्तर प्रदेश सरकार की भर्त्सना करते हैं अगर मैंने कभी कहा हो, जो वहां पर हुआ है, चाहे उत्तर प्रदेश हो, चाहे बिहार हो, चाहे गुजरात हो, चाहे राजस्थान हो, चाहे महाराष्ट्र हो, कहीं भी हो, जहां आदमी मरता है, बेकसूर आदमी मरता है और वह हम सबके लिए कलक की बात है।

श्री राम विलास पासवान : उसको तो प्राइज दिया है, प्रधान मंत्री जी।—(**व्यवधान**)···

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं जानता हूं, अगर उसको कोई इनाम दिया गया है, जैसा हमारे मित्र राम विलास पासवान जी कहते हैं, तो मैं यह विश्वास दिलाता हूं कि अगर वह आदमी दोषी है, मैं इस बारे में जरूर जांच करूंगा, तो उनको सजा मिलेगी। इसमें क्या बात है। अगर कोई गलती हो गई है, मैं यह नही कहता हूं कि हमसे गलती नही होती है, हम देवदूत तो नहीं हैं। लेकिन कुछ लोग हैं वो सीधे स्वर्ग-लोक से सीधे धरती पर उतरे हैं और उनको कोई क्षोभ नहीं है लेकिन हम उन लोगों में से नही हैं। मैं तो आप जैसा एक साधारण नागरिक हूं, मुझे से गलतियां हो सकती है और उन गलतियों को स्वीकार करने के लिए हम हर समय तैयार हैं। मैं यह नही कहता कि जितने काम हो रहे हैं, वे सब सही हो रहे हैं। गलतियां जहां होगी, अगर आप उन

की ओर संकेत करेंगे तो मैं अपने मित्र श्री राम विलास जी को आश्वासन देता हूं···(**व्यवधान**)

श्री शरद यादव (बदायूं) : देवदूत कौम उतरा है यहां पर, यह समझ नहीं पाया। यहां कोई नहीं कहता है, हम देवदूत हैं; हम देवदूत उतरे हैं यहां। (**व्यवधान**)

8.00 **म. प.**

श्री चन्द्र शेखर : मैं उनको देवदूत नहीं मानता हूं क्योंकि वे हमारे ही साथ दो दिन काम किए हैं। वे हमारे ही जैसे साधारण कार्यकर्त्ता है; लेकिन देवदूत होते हैं और आप उनको हमारे से ज्यादा जानते हैं और उनसे परिचित है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि हम लोग इस सवाल के ऊपर एक मत होकर के इसका प्रतिकार करें और मैं अपने मित्र श्री विजय कुमार और श्री खुराना जी से कहूंगा उन्होंने जो सवाल उठाया, यह महत्वपूर्ण सवाल उठाया। मैं उनकी भावनाओं का आदर करता हूं और इस बात के लिए मैं उनकी प्रशसा करता हूं कि इस ज्वलंत समस्या की ओर इस सदन और देश का ध्यान उन्होंने आकृष्ट किया है। उनकी प्रेरणा से हमें भी प्रभावी ढंग से कार्य करने की शक्ति मिलेगी, लेकिन इसमें दोनों की मंशा पर आप कोई आक्रमण न करें तो ज्यादा अच्छा होगा। हम जानते हैं कि आप जैसे, शायद हमारे मन में उनके लिए ममता न हो लेकिन मानवता के प्रति थोड़ा हमारे दिल में भी ममत्व है। यह स्वीकार करके आप काम करें और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि चाहे भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार या बिहार सरकार हो, इस बारे में किसी को भी मतभेद नहीं खड़ा करना चाहिए। हर सरकारें मिल करके इस हालत को बदलें; यही हमारी धारणा है और यही हमारा प्रयास होगा। हरिजन और आदिवासियों के दिलों में जो विश्वास और शंका है, उस विश्वास और शंका की भावना को और अधिक मत बढ़ाइये, क्योंकि शंका, संदेह और भय अगर लोगों के मन में बैठ जाता है तो परिस्थितियां जटिल हो जाती हैं।

मैं सदन के माननीय सदस्यों से यही निवेदन करूंगा कि जो कठिनाइयां, गलतियां और बुराइयां हैं उनको दूर करने के लिए आप कोशिश जरूर करें लेकिन कृपया ऐसा काम न करें जैसे साजिश, षड्यंत्र हो रहा है, सारे हरिजनों और आदिवासियों को पीड़ित और प्रताड़ित करने की कोशिश हो रही है। अगर ये भावना देश के अन्दर फैलाओगे तो इस सदन की ओर हरिजन और आदिवासी आशाभरी निगाह से नहीं देख पायेगा। उसके लिए फ्रसट्रेशन और डेसपेयर (निराशा और अन्धकार) के अलावा और कोई रास्ता नहीं होगा और निराशा और अन्धकार का रास्ता भया वह का रास्ता होता है। आप त्रिपुरा से तमिलनाडु तक देख लीजिये, आदिवासी इलाकों में आज एक बैचेनी, पीड़ा और दर्द है, उस बैचेनी और दर्द को और अधिक आगे न बढ़ायें। उस बैचेनी को दूर करने के लिए हम सब लोग मिलकर प्रयास करें, हमारा यही निवेदन होगा। (**व्यवधान**)

[**अनुवाद**]

उपाध्यक्ष महोदय : जो कुछ भी अनुमति के बिना बोला जाएगा वह कार्यवाही वृतांत में नहीं जाएगा····

*(**व्यवधान**)

*कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री खेमचन्दभाई सोमाभाई चावड़ा : महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि इस प्रकार की घटनाएं रोकने के लिए भारत के प्रधान मंत्री कौन से निवारक कदम उठा रहे हैं।

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस सभा को आश्वासन देता हूं कि आप इस सभा के सभी राजनीतिक दलों के नेताओं की बैठक बुलाएं और इस बारे में निर्णय लें कि ऐसी घटनाओं को दुबारा न होने देने को रोकने के लिए कौन से निवारक कदम उठाए जाएं और सरकार उस निर्णय का अक्षरश: पालन करेगी। (**व्यवधान**)

[**हिन्दी**]

श्री सत्यनारायण जटिया : उत्तर प्रदेश सरकार, केन्द्र सरकार भी इस बारे में घोषणा कर सकती है। केन्द्र सरकार उनको सहायता दे सकती है। (**व्यवधान**)

[**अनुवाद**]

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष महोदय, जबकि इस प्रकार की घोषणा करना मेरे लिए उचित नहीं है लेकिन चूंकि सदस्य बहुत चिंतित और उत्तेजित हैं इसलिए भारत सरकार धन देगी ताकि प्रत्येक मृतक व्यक्ति के परिवार को कम से कम एक लाख रुपया मिल सके। यदि उत्तर प्रदेश अथवा बिहार सरकार ने कुछ क्षतिपूर्ति दी है तब वह भी इसमें शामिल होगी।

[**हिन्दी**]

श्री भोगेन्द्र झा (मधुबनी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं कि हमारे गृह राज्य मंत्री बिहार के मसौढ़ी थाने में गए इसके लिए हमें संतोष है, ऐतराज नहीं है, पर उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ इलाके में या बेगूसराय में जहां पर हत्याएं हुई, वहां पर प्रधान मंत्री जी या गृह राज्य मंत्री जी नहीं गए, यह फर्क क्यों किया, क्यों नहीं वहां पर जा सके ?

श्री चन्द्रशेखर : उपाध्यक्ष महोदय, सम्माननीय सदस्य का ऐतराज सही है, मैं वहां नहीं गया और दूसरी जगह राज्य मंत्री गए। इस जगह पर भी कोई मंत्री या स्वय मैं चला जाऊंगा, अगर इससे उन लोगों को ढाढस और संतोष होता है तो इस संतोष को देने के लिए हम पूरी तरह से तैयार हैं।

श्री संतोष कुमार गंगवार माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो राजनीति में नया हूं। प्रधान-मंत्री जी का भाषण सुनकर मैं बिल्कुल भाव-विभोर हो गया और मैं अपने आपको पब्लिक मीटिंग में समझने लगा। वास्तव में जन सभाओं के लिए इस तरह के भाषण अच्छे हैं। मैं श्री चन्द्रशेखर जी का बहुत आदर करता हूं और मैं समझता हूं कि देश के युवाओं की अगुवाई उन्होंने की है और मुझे लगता है कि कभी सत्ता के पीछे वे नहीं दौड़े। चन्द्रशेखर जी की अपनी अलग स्पष्ट भूमिका रही है और इससे लोगों को लगा कि वास्तव में देश में दूसरी दिशा की सोच के लोग भी हैं, लेकिन अब मुझे ऐसा लग रहा है कि पिछले 4 महीनों में वे उससे बिल्कुल पलट कर सिक्के के दूसरे पहलू के रूप में अपने को प्रकट कर रहे हैं।